टिप्पणी

बगुला समाज के ढोंगी लोगों का प्रतीक है, जो दिखावा कुछ करते हैं और उनका आचरण कुछ और ही होता है। इसलिए कहावत भी है– बगुला भगत ! कविता में भी ढोंगी बगुला ध्यान लगाकर खड़ा है, किंतु मछली को देखते ही उसे झट पकड़ कर, चट गटक जाता है। चिड़िया के 'चतुर' विशेषण पर गौर कीजिए, यह कुछ चालाक लोगों की ओर संकेत करती है। चालाक चिड़िया, मछली को झपट कर उठा लेती है। प्रकृति के ये दृश्य भी समाज के व्यवहार की ओर संकेत करते हैं। समाज में कुछ कपटी, चालाक और धूर्त लोग दूसरों का शोषण करते हैं, किंतु इनकी अधिकता नहीं है। विशेष बात तो यह है कि प्रकृति का प्यार भरा रूप अधिक आकर्षक है।

पूरी कविता में दो दृश्य दिखाई दे रहे हैं– पहला दृश्य खेत का है, जिसमें चना, अलसी, सरसों सब प्रेम से ओत-प्रोत हैं। दूसरा दृश्य पोखर का है, जिसमें बगुला, चिड़िया, पत्थर आदि हैं। ये सब क्रमशः शोषक, चालाक और हृदयहीन व्यक्तियों के प्रतीक हैं। कविता से साफ़ ज़ाहिर है कि ग्राम की पृष्ठभूमि प्यार से उर्वर है, वहाँ एक दूसरे का हो जाने की तमन्ना है, परस्पर प्रेम है, स्नेह है, सौहार्द है।

लेकिन, दूसरे दृश्य में उन बगुला भक्तों का ज़िक्र है, जो अवसर मिलते ही दूसरों की जान तक ले लेते हैं। वे शोषक हैं और संवेदनशून्य।

पाठगत प्रश्न-8.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. तालाब के तल में भूरी घास लहरियाँ क्यों लेती है? क्योंकि:–

(क) तालाब का पानी हिलता है। ☐ (ख) तालाब के नीचे हवा है। ☐

(ग) घास घुँघराली है। ☐ (घ) मछलियाँ घास को हिला देती हैं। ☐

2. चाँद गोल खंभा-सा क्यों लग रहा है?

(क) पानी के हिलने के कारण ☐ (ख) पानी के ठहरे होने के कारण ☐

(ग) मछलियों के चलने के कारण ☐ (घ) बगुलों के भय के कारण ☐

3. बगुला किसका प्रतीक है?

(क) शोषित का ☐ (ख) मजदूर का ☐

(ग) भूखे व्यक्ति का ☐ (घ) शोषक का ☐

टिप्पणी

4. काले माथे वाली चिड़िया प्रतीक है—

(क) सादे लोगों की ☐ (ख) चालाक लोगों की ☐

(ग) पठित वर्ग की ☐ (घ) श्रमिक वर्ग की ☐

क्रियाकलाप-8.2

'प्रकृति की व्यापारिक नगर से' पंक्ति में आपने 'व्यापारिक' शब्द पढ़ा है; इसे समझने के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए :

मास + इक = **मा**सिक

वर्ष + इक = **वा**र्षिक

धर्म + इक = **धा**र्मिक

इतिहास + इक = **ऐ**तिहासिक

मूल + इक = **मौ**लिक

'इक' प्रत्यय लगने पर मूल शब्द में परिवर्तन के नियम निम्नलिखित हैं—

पूर्वस्वर में वृद्धि तथा अंतिम स्वर का लोप हो जाता है।

शब्द के पहले अक्षर के साथ बोले जाने वाले स्वर में वृद्धि हो जाती है, जैसे

- 'अ' का 'आ' हो जाएगा मास + इक = (मासिक)
- इ, ई, ए का ऐ हो जाएगा इतिहास + इक = (ऐतिहासिक)
- उ, ऊ, ओ का औ हो जाएगा मूल + इक = (मौलिक)

सामासिक शब्द में चूँकि दो शब्द होते है, अतः दोनों ही शब्दों के पहले अक्षर के स्वर में वृद्धि होगी।

पूर्वस्वर में वृद्धि तथा अंतिम स्वर के लोप का नियम ऊपर दिए अनुसार ही होगा तथा 'इक' प्रत्यय अंत में जुड़ेगा।

जैसे— परलोक का पारलौकिक बनेगा।

पर + लोक

पार + लौक

नीचे दिए गए शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर लिखिए:

दिन, सप्ताह, पक्ष, मर्म, देह, निसर्ग, सर्वभूमि, इहलोक, इन्द्रजाल, अधिभूत

8.3 भाव-सौंदर्य

कविता पढ़कर आप यह तो जान ही गए कि यह कविता प्रकृति-सौंदर्य तथा ग्रामीण परिवेश के मोहक वातावरण को चित्रित करती है। इस वातावरण ने कवि को इतना

टिप्पणी

आकर्षित किया कि खेत के मेंड पर बैठे-बैठे उसने यह कविता रच डाली। देखे हुए प्राकृतिक सौंदर्य को पाठक तक पहुँचाने के लिए कवि ने एक सुंदर कल्पना की है। उसने विवाह के उत्सव का आरोप प्रकृति पर किया है। जिस प्रकार विवाह या किसी अन्य उत्सव के अवसर पर मनुष्य समाज में हलचल बढ़ जाती है, वैसे ही कवि को प्रकृति भी उल्लसित, हलचल से युक्त लगती है।

कवि ने वातावरण की प्रत्येक वस्तु को बड़े ध्यान से देखा है, इसीलिए वह इतने प्रभावशाली ढंग से उसे प्रस्तुत कर पाया है। जिन चीजों को हम देखकर अकसर उनकी उपेक्षा कर देते हैं, कवि ने उनका चित्रण, इस कविता में किया है। पोखर के तल में गतिमान भूरी घास, पोखर के पानी में चाँद के प्रतिबिंब में गोल खंभे की कल्पना, पत्थरों और पानी के लंबे साथ को इस रूप में देखना कि पत्थर झुककर न जाने कब से पानी पी रहे हैं फिर भी उनकी प्यास नहीं बुझती। इन सबके साथ बगुले और चिड़िया की गतिविधियों को कवि ने पाठक के सामने साक्षात कर दिया है।

8.4 भाषा-सौंदर्य

इस कविता के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते समय कवि ने जो देखा, उसे सरल-सहज शब्दों में कविता के रूप में बाँध दिया है।

आप पढ़ चुके हैं कि इस कविता में स्थान-स्थान पर मानवीकरण है। क्या आप बता सकते हैं कहाँ है? जी हाँ ! चने के पौधे को दूल्हा बनाया गया है। उसके सिर पर मुरैठा बँधा हुआ है। अलसी को हठीली बताया गया है, उसकी कमर को लचीली और देह को पतली बताया गया है। चूँकि उसके फूल नीले निकलते हैं, इसलिए कहा गया है कि **'नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर'**। कवि ने प्रकृति का कितना सुंदर दृश्य प्रस्तुत किया है–अलसी कहती है कि जो मुझे छुए उसे मैं अपना हृदय दे दूँ। इसी प्रकार सरसों को सयानी लड़की बनाकर प्रस्तुत किया है, जिसके हाथ पीले होने हैं, वह मंडप में ब्याह रचाने के लिए बैठी है। इसी प्रकार के सभी दृश्य मानवीकरण के ही उदाहरण हैं। इसी प्रकार फागुन मास का महीना फाग गाता है या फिर पत्थर कई वर्षों से पानी पी रहे हैं पर फिर भी प्यासे हैं।

इस कविता के कुछ दृश्यों में प्रतीकों की कल्पना भी की जा सकती है। आइए, इसे भी समझें। आप कविता के दूसरे अंश पर फिर से ध्यान दीजिए। उदाहरण के लिए–मछली सामान्य मानव के लिए, बगुले को सफ़ेदपोश व्यक्तियों के लिए या फिर पत्थर दिल इंसान के लिए, जो गरीबों का, आम जनता का शोषण करता रहता है, प्रतीक बनकर प्रयुक्त हुए हैं।

इस कविता को पढ़ते समय आपने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि बीते के बराबर, ठिगना, मुरैठा, ब्याह, हठीली, लचीली, फाग, अंचल, चकमकाते आदि बोलचाल के सामान्य शब्दों का सुंदर प्रयोग कर कविता सहज बन पड़ी है। साथ ही विवाह का सुंदर दृश्य उपस्थित करने के लिए उसी से जुड़ी शब्दावली के प्रयोग से कविता का सौंदर्य और बढ़ गया है, जैसे–मुरैठा, हाथ पीले करना, ब्याह-मंडप, फाग गाना, स्वयंवर आदि।

टिप्पणी

कहाँ 'बिंदु' और कहाँ 'चंद्रबिंदु'?

आइए भाषाा के एक प्रमुख रूप 'बिंदु' और उसके समान दूसरे रूप –चंद्र बिंदु' के प्रयोग को समझने की कोशिश करते हैं।

'चंद्रगहना' गाँव में, 'चंद्र' के ऊपर एक बिंदु लगा है। इसे अनुस्वार कहते हैं। यहाँ इसका उच्चारण 'न्' का है। इस कविता में कई शब्द आये हैं, जिनमें 'बिंदु' (अनुस्वार) या 'चंद्रबिंदु' (अनुनासिक) का प्रयोग हुआ है

आइए, अनुनासिकता को समझते हैं। आप जानते हैं कि 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ— ये सभी स्वर मौखिक स्वर हैं यानी इनके उच्चारण में सारी प्राणवायु केवल मुँह से निकलती है। अनुनासिकता स्वरों का ही एक ध्वनिगुण है, इसमें मुँह के साथ-साथ प्राणवायु का कुछ भाग नाक से भी निकलता है। हम सभी स्वरों को अँ आँ इँ, ई, उँ, ऊँ, एँ— इस तरह भी बोल सकते हैं। नियम यह है कि शिरोरेखा के ऊपर यदि मात्रा है, तो केवल बिंदी का प्रयोग करते हैं।

आँख पैरों, (पैरो)

ऊँट मैं, (मैं)

हँस सेंक (सेंक) आदि

अनुस्वार और अनुनासिक में मुख्य अंतर यह है कि अनुस्वार एक व्यजंन है (पंचम व्यंजन— ङ्, ञ् ण् ण् न् म्), किंतु अनुनासिकता स्वर का ही गुण है। इन दोनों के पढ़ने में भी अंतर है। अनुनासिक को स्वर के साथ ही पढ़ा जाएगा, किंतु अनुस्वार का उच्चारण स्वर के बाद स्वतंत्र रूप से होगा।

नीचे दिए गए उदाहरण ध्यानपूर्वक पढ़िए और पाठ से शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों को भरिए:

(क) अनुस्वार	(ख) अनुनासिक	
1. चंद्रगहना	1. हूँ	
2. मंडप	2. दूँ	
3. अंचल	3. बाँधे	
4. चंचल	4. लहरियाँ	
5. पंख	5. चाँदी	
6. खंभा	6. आँख	
	7.	7. .....
	8.	8. .....

टिप्पणी

9.	.....	9.	.....
10.	.....	10.	.....

ध्यान दीजिए :

पंख – प ङ् ख	क ख ग घ ङ
चंचल – चञ्चल	च छ ज झ ञ
मंडप – मण्डप	ट ठ ड ढ ण
चंद्र – चन्द्र	त थ द ध न
खंभा – खम्भा	प फ ब भ म

ङ, ञ, ण, न और म पंचम वर्ण हैं। जब भी ये अपने वर्ग के किसी वर्ण से संयुक्त होते हैं, तो उनको अलग से नहीं लिखकर उनके स्थान से पहले वाले अक्षर के ऊपर अनुस्वार के रूप में लिखा जा सकता है। इसे पंचम वर्ण नियम कहते हैं। ऊपर दिए गए शब्दों को फिर से ध्यानपूर्वक देखिए।

पाठगत प्रश्न–8.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कविता में सरसों का सयानी होने का संकेत किससे मिलता है?

(क) हठीली होने से ☐ (ख) ब्याह-मंडप में पधारने से ☐

(ग) हृदय दान देने से ☐ (घ) पीले फूल आने से ☐

2. नीचे विकल्पों में शब्द तथा उसमें आए पंचम व्यंजन दिए गए हैं। इस दृष्टि से कौन-सा युग्म गलत है–

(क) कंचन – ञ् ☐ (ख) अनंत – न् ☐

(ग) पंडित – ण् ☐ (घ) अंजन – ङ् ☐

आपने क्या सीखा

- ग्रामीण परिवेश से जुड़े प्रकृति-चित्रण को कवि ने बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।
- चने के खेत की मेंड़ पर बैठे कवि ने हरे चने के गुलाबी फूल को खिले हुए होने के कारण मुरैठा बाँधे और पीली सरसों के फूल खिले होने के कारण उसके हाथ पीले होने और विवाह-मंडप आदि को सुंदर रूप में चित्रित किया है। अलसी को

टिप्पणी

दुबली-पतली लड़की और हठीली बताया है, क्योंकि वह बीच खेत में होती है। उसके नीले फूल होते हैं, इसलिए *'नील फूले फूल को शीश पर चढ़ाकर'* कवि ने कहा है।

- प्रकृति, माँ के रूप में अपने आँचल की छाया प्रदान कर रही है। इस प्रकार ग्रामीण स्थान पर प्रेम ही प्रेम दृष्टिगोचर हो रहा है।
- फागुन फाग गा रहा है, सरसों सयानी हो गई है, चना मुरैठा बाँधे खड़ा है आदि में मानवीकरण अलंकार है।
- गाँव के तालाब का भी सुंदर चित्रण है। कई वर्षों के प्यासे पानी पीते पत्थर, नीले तल का पोखर, उसमें लहराती हुई घास, मछली, बगुला सभी प्रतीक रूप में प्रयुक्त होकर कविता को नया अर्थ देते हैं।
- सफ़ेद बगुले को ढोंगी बताकर उसके माध्यम से सफ़ेदपोश व्यक्तियों के ऊपर कटाक्ष किया गया है। वह कैसे अपना शिकार पकड़ता है, बतलाया गया है।
- मछली आम आदमी का प्रतीक है, जिसे हर कोई अपना शिकार बनाना चाहता है।

योग्यता विस्तार

कवि-परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बाँदा जिले के कमासिन गाँव में 1 अप्रैल, 1911 को हुआ था। उनकी कविताओं में श्रमिक, कृषक और संघर्षशील जीवन के अनेक चित्र हैं। अद्‌भुत प्रकृति-चित्रण के लिए भी केदारनाथ अग्रवाल जाने जाते हैं। अनूठा शब्द चयन और चित्रात्मकता इनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री अग्रवाल की कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं—जमुन जल तुम, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आईना, अनहारी हरियाली, कहें केदार खरी-खरी, आत्मगंध, कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह (कविता संग्रह); पतिया (उपन्यास); विचार-बोध, विवेक-विवेचन (निबंध-संग्रह); कवि-मित्रों से दूर (वार्ता)।

'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता 'फूल नहीं, रंग बोलते हैं' संग्रह में है। इस कविता में केदारनाथ अग्रवाल ने शहरी और ग्रामीण परिवेश की जीवन-शैली का तुलनात्मक और प्रतीकात्मक चित्रण किया है।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए :

   (क) बीच में अलसी हठीली
   देह की पतली कमर की है लचीली,

   (ख) फाग गाता मास फागुन
   आ गया है आज जैसे।

   (ग) श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
   टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,

2. कविता के आधार पर चने के सौंदर्य का चित्रण कीजिए और बताइए कि उसे किन-किन रूपों में दर्शाया गया है?

3. सरसों को *'हो गई सबसे सयानी'* क्यों कहा गया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

4. व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर क्यों माना गया है?

5. *'एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा'* का चित्र अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

6. बगुला समाज के किस वर्ग का प्रतीक है और किन विशेषताओं को रेखांकित करता है? क्या आज के समाज में यह उदाहरण प्रासंगिक है?

7. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है? क्या आप उससे संतुष्ट हैं? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

8. हृदयहीन पत्थर किन लोगों का प्रतीक है? क्या आज के समाज से ऐसे उदाहरण दे सकते हैं?

9. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

   छोटे-से आंगन में
   माँ ने लगाए हैं
   तुलसी के बिरवे दो
   पिता ने उगाया है
   बरगद छतनार
   मैं अपना नन्हा गुलाब
   कहाँ रोप दूँ।

   – केदारनाथ सिंह

   (i) 'तुलसी के बिरवे' और 'छतनार बरगद' के संकेतों को स्पष्ट कीजिए।

टिप्पणी

(ii) 'मैं अपना नन्हा गुलाब/कहाँ रोप दूँ?' से कवि का क्या आशय है।

(iii) 'गुलाब' किसका प्रतीक है?

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1. 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग)

8.2. 1. (क) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख)

8.3. 1. (घ) 2. (घ)